अध्ययन सामग्री

विषय - हिन्दी

वर्ग - स्नातकोत्तर

सेमेस्टर - IV

प्रश्न पत्र - XIV

सुमन कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा।

रिचर्ड्स का मूल्य सिद्धान्त

Scanned with CamScanner

प्र.4 रिचर्ड्स के 'मूल्य सिद्धांत' की अवधारणा को समझाईए।

उ:- बीसवीं सदी के आलोचकों में यश और प्रभाव दोनों ही दृष्टियों से आई० ए० रिचर्ड्स का गौरवपूर्ण स्थान है। इनका जन्म इंग्लैण्ड में सन् 1893 में हुआ था। ये अर्थशास्त्र एवं मनोविज्ञान के विद्यार्थी थे। रिचर्ड्स अनेक वर्षों तक हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे। इन्होंने लगभग एक दर्जन ग्रंथों की रचना की; जिसमें 'प्रिन्सिपल ऑफ् लिटरेरी क्रिटिसिज्म' सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

रिचर्ड्स का सैद्धांतिक दृष्टिकोण :- उस समय के पाश्चात्य जगत् में साहित्य समीक्षा के अनेक सिद्धान्त प्रचलित थे। क्रोचे तब तक नवीन उपलब्धि के आधारों पर अभिव्यंजनावाद को स्थापित कर चुके थे। सिगमण्ड, फ्रायड, युंग तथा एडलर ने मनोविज्ञान मनोविश्लेषण का प्रतिपादन किया। उधर मेक्स ईस्टमैन ने कविता को विज्ञान का अनुगमन करने की सलाह दी, परन्तु कल्पना से सम्बद्ध होने के कारण विज्ञान के सामने कविता की महत्ता ही कम लगी। तब आर्नल्ड ने यह घोषणा की कि धर्म और संस्कृति के इस संक्रांति काल में कविता ही मानव का उद्धार कर सकती है।

इस संक्रांति काल में वैज्ञानिक उन्नति एवं भौतिक समृद्धि के संदर्भ में कविता का अवमूल्यन होने लगा। तब रिचर्ड्स मनोविज्ञान के क्षेत्र में आए और मनोविज्ञान का आधार लेकर उन्होंने दो प्रमुख सिद्धांत दिये—

(1) कला का मूल्यवादी या उपयोगितावादी सिद्धांत,
(2) ~~और~~ सम्प्रेषणीयता का सिद्धांत।

इसके अतिरिक्त उनके चिन्तन के दायरे में काव्य और कला सम्बन्धी कई विषय रहे, (उदाहरणार्थ- सफल काव्य के गुण, काव्य-भेद, कलापक्ष का विवेचन, कला और

कला-सम्बन्धी कई विषय रहे। नैतिकता, काव्य और कला, समीक्षा - सिद्धांत साहित्य और विज्ञान आदि।

मूल्य का सिद्धांत :- रिचर्ड्स ने अपने सिद्धांतों की स्थापना से पूर्व अनेक प्रचलित मतों, विचारों मान्यताओं का तर्कपूर्ण खण्डन किया। उनके इस प्रकार के तर्कों का सिलसिला 'फाउन्डेशन्स ऑफ एस्थेटिक्स', 'प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म' 'साइंस एंड पोएट्री' आदि में देखते ही बनता है। कांट ने कहा था कि सौन्दर्य मानव की किसी विशिष्ट भावना का परितोष करता है। इस प्रकार के अनेक प्रभाववादी और आनंदवादी मतों की एक तालिका रिचर्ड्स ने 'फाउन्डेशन्स ऑफ एस्थेटिक्स' में दी है। प्रभाववाद का केवल इतना ही है कि वह सौन्दर्य से भावनाओं के जाग्रत होने की मानता है। जार्ज संतायना ने अपने आनंदवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हुए सौन्दर्य और आनंद के अनिवार्य संबंध का निरूपण किया है वे स्पष्ट कहते हैं कि सौन्दर्य से आनंद की अनुभूति होती है। संतायना के इस मत का खण्डन करते हुए रिचर्ड्स ने कहा कि सभी आनंदमूलक भावनाओं का संबंध सौंदर्य से नहीं होता है। फिर एक विशेष प्रकार के आनंद का रूप - स्वरूप और स्वभाव न तो अभी तक निर्धारित किया जा सका है न उसके निर्धारण की कोई उम्मीद ही नजर आती है। क्लाइव बेल और रोजर फ्राई आदि सौन्दर्य से जिस आनंदानुभूति ~~सौन्दर्य~~ में ~~'समानुभूति~~ की बात करते थे, रिचर्ड्स उससे सहमत नहीं। ~~हो सके~~ वे इस तरह के सभी आनंदवादी सिद्धांतों को 'रिचर्ड्स' ने जोरदार तर्कों से उनका बहिष्कार कर दिया। 'दि प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म' में इस धारणा का विस्तार से खण्डन किया कि

Scanned with CamScanner

मानव मन में कोई विशेष सौंदर्य भावना होती है। मानव मूल्यों यह सौन्दर्य हमें आनन्द देता है। आनन्द भावना को अस्वीकार करते हुए रिचर्ड्स ने इसे छायाभास की संज्ञा दी है। उनका तर्क है कि मनोविज्ञान द्वारा किसी स्वतंत्र सौन्दर्य भावना का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता है। सौन्दर्यानुभूति का संबंध उन्हीं सामान्य भावनाओं से है जिनका प्रकाशन और कार्य जीवन के सभी क्षेत्रों में दिखाई देता है।

कविता और पाठक के संबंध पर विचार करते हुए उन्होंने काव्य-सम्प्रेषण, काव्य-प्रभाव की प्रकृति की व्याख्या और विश्लेषण का कार्य बड़ी गंभीरता से किया। सौन्दर्यानुभूति या काव्यानुभूति की प्रकृति पर विचार करते हुए वे इस मूल स्थापना पर पहुँचे थे कि काव्यानुभूति और जीवनानुभूति में प्रकृति का भेद नहीं होता। तत्वतः वे एक सी हैं। इनमें अधिक से अधिक इस बात का अंतर होता है कि काव्यानुभूति या कलानुभूति में सामान्य अनुभवों की सूक्ष्मतर व्यवस्था होती है। किन्तु यह व्यवस्था न तो तत्वतः भिन्न होती है न मौलिक। रिचर्ड्स ने दृष्टांत देकर कहा कि जब हम कविता पढ़ते हैं या चित्र देखते हैं या मधुर संगीत सुनते हैं तो वह यह जो अनुभव सुबह हम तैयार होते हुए गैलरी में चलते हुए करते हैं उससे अपनी प्रकृति में भिन्न नहीं होता। कांट के पूर्ववर्ती और परवर्ती लेखकों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि जो लोग कलाओं के संदर्भ में विशिष्ट, अद्वितीय; असाधारण कलानुभव की सत्ता स्वीकार करते थे या इनके पक्ष में चुन-चुनकर दलीलें पेश करते थे, वे दलीलें आज भ्रामक सिद्ध हो गई हैं। मनोविज्ञान में इस प्रकार के किसी भी अनुभव के लिए स्थान ही नहीं है।

अब यह प्रश्न उठना जरूरी है कि